पी.जी.डी.टी.

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम (पी.जी.डी.टी.) (संशोधित)

सत्रीय कार्य
2025

(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
सत्रीय कार्य 2025
(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' (संशोधित) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। इसके लिए छह पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा। ये सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं :

पाठ्यक्रम	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि*	
	जनवरी 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–051 : अनुवाद : सिद्धांत और परंपरा	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–052 : अनुवाद : प्रक्रिया और प्रविधि	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–053 : अनुवाद : भाषिक और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी–054 : प्रशासनिक एवं वाणिज्यिक अनुवाद	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–055 : अनुवाद : साहित्य और जनसंचार	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–033 : स्क्रिप्ट लेखन, रूपांतरण एवं दृश्य–श्रव्य माध्यम	30.09.2025	31.03.2026

***नोट : कृपया सभी सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि से पूर्व अथवा विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित अंतिम तिथि अवश्य भेज दें। ध्यान दें कि सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि में परिवर्तन किया जा सकता है। सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए आप इग्नू वेबसाइट देखिए। आपको सलाह दी जाती है कि आप सत्रीय कार्यों को निर्धारित तिथि के पहले ही भेज दें।**

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि, अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों, उसकी प्रक्रिया तथा बारीकियों की जानकारी देते हुए, विविध क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य–सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके चार सत्रीय कार्यों के लिए चार उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक : ..... नामांकन संख्या : .....
नाम : .....
पता : .....
.....

पाठ्यक्रम कोड :.....
पाठ्यक्रम का शीर्षक : .....
सत्रीय कार्य कोड : ..... हस्ताक्षर :.....
अध्ययन केंद्र का नामः ..... तिथि : .....

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बाईं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में, और लघु निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर 200–250 शब्दों में देने हैं। व्यावहारिक अनुवाद संबंधी प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्त्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक है, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। हिंदी और अंग्रेजी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से

संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों,

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हों,

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुरूप हों,

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों, और

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

एम.टी.टी.–055
अनुवाद : साहित्य और जनसंचार
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–055
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–055/टीएमए/2025
अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. साहित्यानुवाद के महत्व एवं प्रक्रिया की चर्चा कीजिए। 10

2. नाटक के अनुवाद में किन–किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है? सोदाहरण वर्णन कीजिए। 10

3. 'श्रव्य माध्यम और अनुवाद' पर निबंध लिखिए। 10

4. डबिंग और सबटाइटलिंग के अनुवाद की चुनौतियों का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 10

5. निम्नलिखित गद्यांशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 15x2=30

A) Mr and Mrs Othello were elated. They just received news that they had inherited a house in the Delli Culta district, one of the prime locations in Lahore. Less welcome was the news that Mr Othello's father had died, and they had to conduct the proper funeral rites for him. In addition, they had to handle all the details concerning his demise before they could inherit the house. This was revealed by the lawyer in charge of the late Mr Othello's will. An observer would not be wrong in surmising that the son was not close to his father.

The young Othello was the only son of the late Othello. He had a fierce row with his father when he wanted to marry his present wife, Dean, a pretty Australian and settle down with her in her homeland. The result was that his father had withdrawn all financial support and severed all ties with him. It was therefore a surprise for Alvin, the younger Othello, when he received news of the surprise windfall. "The old man must have forgiven me," he thought to himself gleefully. Because he was not doing well in Australia, this was an opportune time to settle in Lahore.

B) In 1274, Italian explorers Marco and Niccolo Polo set out on a 24 year journey in which they traveled the famous Silk Road from Italy, through brutal deserts and towering mountains to eastern China. They traveled over 4,000 miles in all. Marco and Niccolo were among the very first Europeans to explore the fabled empire of China. In China, Marco Polo even worked for ruler Kublai Khan. Polo detailed his experiences and findings in China by writing a book. Polo described materials and inventions never before seen in Europe. Paper money, a printing press, porcelain, gunpowder and coal were among the products he wrote about. He also described the vast wealth of Kublai Khan, as well as the geography of northern and southern China. European rulers were very interested in the products Polo described. However, trading for them along the Silk Road was dangerous, expensive and impractical. European rulers began to wonder if there was a sea route to the east to get the products they wanted at a reasonable price.

5. निम्नलिखित गद्यांशों का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 15x2=30

क) वीरवर अमरसिंह मारवाड़ के राठौड़ राजा गजसिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे। इनके समय में राजस्थान के प्रायः सभी राजपूत नरेश प्रतापी मुगल सम्राट शाहजहाँ के अधीन हो चुके थे। नियमानुसार प्रत्येक

राजपूत नरेश को स्वयं अथवा अपने पुत्र को शाही दरबार में उपस्थित रखना पड़ता था। वहाँ वे अपनी वीरता और पराक्रम के बल पर उन्नति करते थे।

अमरसिंह राठौड़ भी शाहजहाँ के दरबार में किसी उच्च पद पर नियुक्त थे; किंतु इस कारण के अतिरिक्त दूसरा मुख्य कारण और भी था। अमरसिंह के बचपन से ही तेजस्वी और उद्दंड होने के कारण मारवाड़ के सभी सामंत–सरदार अमरसिंह से रुष्ट रहने लगे, यहाँ तक कि उनके पिता गजसिंह भी उनसे अप्रसन्न रहते थे। मारवाड़–नरेश के ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण अमरसिंह राज्य–सिंहासन के वास्तविक उत्तराधिकारी थे, किंतु गजसिंह ने उनका राज्याधिकार से च्युत कर अपने छोटे पुत्र यशवंतसिंह को युवराज बना दिया था। मारवाड़ सिंहासन से कुछ संबंध न रहने के कारण अमरसिंह शाही दरबार में ही रहा करते थे। दरबार में उन्होंने अच्छी ख्याति प्राप्त की थी और बादशाह ने भी प्रसन्न होकर 'तीन हजारी' का मनसब और 'राव' की उपाधि देकर नागौर का इलाका उनके अधीन कर दिया था।

पैतृक राज्याधिकार से वंचित किए जाने पर भी अमरसिंह ने अपने बाहुबल से यह सम्मान प्राप्त किया था; किंतु जिस उद्दंड स्वभाव के कारण उनको स्वदेश और युवराज पद तक से वंचित रहना पड़ा, उसने यहाँ भी उनका पीछा न छोड़ा, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अकाल में ही इस संसार को छोड़ना पड़ा।

ख) दो गोल से पिछड़ने के बावजूद शनिवार को भारतीय हॉकी टीम ने न्यूजीलैंड को 3–2 से हराकर राष्ट्रमंडल खेलों के फाइनल में प्रवेश किया। रविवार को फाइनल में भारत का मुकाबला मौजूदा चैम्पियन ऑस्ट्रेलिया से होगा, जो 2010 राष्ट्रमंडल खेलों फाइनल की पुनरावृत्ति होगी। एक अन्य सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड को 4–1 से हराया।

नियमित कप्तान सरकार सिंह के बिना खेल रहे भारत के लिए कार्यवाहक कप्तान रुपिन्दर पाल सिंह, रमनदीप सिंह और आकाशदीप सिंह ने गोल दाग कर टीम के लिए कम से कम रजत पदक पक्का कर दिया। किवी टीम ने दूसरे मिनट में साइमन चाइल्ड के गोल की बदौलत 1–0 की बढ़त हासिल कर ली थी। दसवें मिनट में कीवी टीम को पेनाल्टी कॉर्नर मिला, लेकिन वह इसे गोल में तब्दील नहीं कर सके। हालाँकि 18वें मिनट में मिले पेनाल्टी कॉर्नर में न्यूजीलैंड ने कोई गलती नहीं की और निक हेग ने गेंद गोल पोस्ट में डाल कीवी टीम को 2–0 की बढ़त दिला दी। 27वें मिनट में भारत को एकमात्र पेनाल्टी कॉर्नर मिला और ड्रेग फ्लिकर वी. रघुनाथ ने गेंद को नेट में डाला, रुपिन्दर ने गोल कर भारत को पहली सफलता दिलाई।